चतुर्मास एवं पुरुष सूक्त

चतुर्मास में भगवान श्रीविष्णु के योगनिद्रा में शयन करने पर जिस किसी नियम का पालन किया जाता है, वह अनंत फल देनेवाला होता है - ऐसा ब्रह्माजी का कथन है ।

जो मानव भगवान वासुदेव के उद्देश्य से केवल शाकाहार करके चतुर्मास व्यतीत करता है वह धनी होता है। जो प्रतिदिन नक्षत्रों का दर्शन करके केवल एक बार ही भोजन करता है वह धनवान, रूपवान और माननीय होता है। जो मानव ब्रह्मचर्य-पालनपूर्वक चौमासा व्यतीत करता है वह श्रेष्ठ विमान पर बैठकर स्वेच्छा से स्वर्गलोक जाता है। जो चौमासेभर नमक को छोड़ देता है उसके सभी पूर्तकर्म (परोपकार एवं धर्मसम्बन्धी कार्य) सफल होते हैं। जिसने कुछ उपयोगी वस्तुओं को चौमासेभर त्यागने का नियम लिया हो, उसे वे वस्तुएँ ब्राह्मण को दान करनी चाहिए। ऐसा करने से वह त्याग सफल होता है। जो मनुष्य नियम, व्रत अथवा जप के बिना चौमासा बिताता है वह मूर्ख है।

जो चतुर्मास में भगवान विष्णु के आगे खड़ा होकर 'पुरुष सूक्त' का जप करता है, उसकी बुद्धि बढ़ती है। *(स्कंद पुराण, नागर खण्ड, उत्तरार्ध)*

बुद्धि बढ़ाने के इच्छुक पाठक और 'बाल संस्कार केन्द्र' के बच्चे 'पुरुष सूक्त' से फायदा उठायें। आनेवाले दिनों में 'बाल संस्कार केन्द्र' के बुद्धिमान बच्चे ही देश के कर्णधार होंगे।

पुरुष सूक्त

(ऋग्वेद : १०-९०, यजुर्वेद : अध्याय ३१)

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥१॥

'आदिपुरुष असंख्य सिर, असंख्य नेत्र और असंख्य पाद से युक्त था। वह पृथ्वी को सब ओर से घेरकर भी दस अंगुल अधिक ही था।'

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥

'यह जो वर्तमान जगत है, वह सब पुरुष ही है। जो पहले था और आगे होगा, वह भी पुरुष ही है, क्योंकि वह अमृतत्व का, देवत्व का स्वामी है। वह प्राणियों के कर्मानुसार भोग देने के लिए अपनी कारणावस्था का अतिक्रम करके दृश्यमान जगत-अवस्था को स्वीकार करता है, इसलिए यह जगत उसका वास्तविक स्वरूप नहीं है।'

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥

'अतीत, अनागत एवं वर्तमान रूप जितना जगत है उतना सब इस पुरुष की महिमा अर्थात् एक प्रकार का विशेष सामर्थ्य है, वैभव है, वास्तवस्वरूप नहीं। वास्तव पुरुष तो इस महिमा से भी बहुत बड़ा है। सम्पूर्ण त्रिकालवर्ती भूत इसके चतुर्थ पाद में हैं। इसके अवशिष्ट सच्चिदानंद-स्वरूप तीन पाद अमृतस्वरूप हैं और अपने स्वयंप्रकाश द्योतनात्मक रूप में निवास करते हैं।'

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वं व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥

'त्रिपाद पुरुष संसाररहित ब्रह्मस्वरूप है। वह अज्ञानकार्य संसार से विलक्षण और इसके गुण-दोषों से अस्पृष्ट है। इसका जो किंचित् मात्र अंश माया में है वही पुनः-पुनः सृष्टि-संहार के रूप में आता-जाता रहता है। यह मायिक अंश ही देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि विविध रूपों में व्याप्त है। वही सभोजन प्राणी है और निर्भोजन जड़ है। सारी विविधता इस चतुर्थांश की ही है।'

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥

'उस आदिपुरुष से विराट ब्रह्माण्ड देह की उत्पत्ति हुई। विराट देह को ही अधिकरण बनाकर उसका अभिमानी एक और पुरुष प्रकट हुआ। वह पुरुष प्रकट होकर विराट से पृथक् देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि के रूप में हो गया। उसके बाद

पृथ्वी की सृष्टि हुई और जीवों के निवास योग्य सप्त धातुओं के शरीर बने।'

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥६॥

'देवताओं ने उसी उत्पन्न द्वितीय पुरुष को हविष्य मानकर उसीके द्वारा मानस यज्ञ का अनुष्ठान किया। इस यज्ञ में वसंत ऋतु आज्य (घृत) के रूप में, ग्रीष्म ऋतु ईंधन के रूप में और शरद ऋतु हविष्य के रूप में संकल्पित की गयी।'

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अजयन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥७॥

'वही द्वितीय पुरुष यज्ञ का साधन हुआ। मानस यज्ञ में उसीको पशु-भावना से यूप (यज्ञ का खंभा) में बाँधकर प्रोक्षण किया गाया, क्योंकि सारी सृष्टि के पूर्व वही पुरुषरूप से उत्पन्न हुआ था। इसी पुरुष के द्वारा देवताओं ने मानस याग किया। वे देवता कौन थे ? वे थे सृष्टि-साधन योग्य प्रजापति आदि साध्य देवता एवं तदनुकूल मंत्रद्रष्टा ऋषि। अभिप्राय यह है कि उसी पुरुष से सभीने यज्ञ किया।'

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशून् ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये ॥८॥

'इस यज्ञ में सर्वात्मक पुरुष का हवन किया जाता है। इसी मानस यज्ञ से दधिमिश्रित आज्य-सम्पादन किया गया अर्थात् सभी भोग्य पदार्थों का निर्माण हुआ। इसी यज्ञ से वायुदेवताक आरण्य (जंगली) पशुओं का निर्माण हुआ। जो ग्राम्य पशु हैं, उनका भी।'

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥९॥

'पूर्वोक्त सर्वहवनात्मक यज्ञ से ऋचाएँ और साम उत्पन्न हुए। उस यज्ञ से ही गायत्री आदि छन्दों का जन्म हुआ। उसी यज्ञ से यजुष् (यजुर्वेद) की भी उत्पत्ति हुई।'

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः ॥१०॥

'उस पूर्वोक्त यज्ञ से यज्ञोपयोगी अश्वों का जन्म हुआ। जिनके दोनों ओर दाँत होते हैं, उनका भी जन्म हुआ। उसीसे गायों का भी जन्म हुआ और उसीसे बकरी-भेड़ें भी पैदा हुईं।'

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥११॥

'जब द्वितीय पुरुष ब्रह्मा की ही यज्ञ-पशु के रूप में कल्पना की गयी, तब उसमें किस-किस रूप से, किस-किस स्थान से, किस-किस प्रकार-विशेष से उसके अंग-उपांगों की भावना की गयी ? उसका मुख क्या बना ? उसके बाहु क्या बने ? तथा उसके ऊरु (जंघा) और पाद क्या कहे गये ?'

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥१२॥

'इस पुरुष का मुख ही ब्राह्मण के रूप में कल्पित है। बाहु राजन्य माना गया है। ऊरु वैश्य है और चरण शूद्र हैं।'

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥१३॥

'मन से चन्द्रमा, चक्षु से सूर्य, मुख से इन्द्र तथा अग्नि और प्राण से वायु की कल्पना की गयी।'

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥१४॥

'नाभि से अंतरिक्ष लोक, सिर से द्युलोक, चरणों से भूमि और श्रोत्र से दिशाएँ - इस प्रकार लोकों की कल्पना की गयी।'

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥

'जब देवताओं ने अपने मानस यज्ञ का विस्तार करते हुए वैराज पुरुष (परमात्मा) को पशु के रूप में कल्पित किया, तब इस यज्ञ की सात परिधियाँ हुईं और इक्कीस समिधाएँ।'

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥

'प्रजापति के प्राणरूप विद्वान देवताओं ने अपने मानस संकल्परूप यज्ञ के द्वारा यज्ञस्वरूप पुरुषोत्तम का यजन (आराधन, याग) किया। वही धर्म है सर्वश्रेष्ठ एवं सनातन, क्योंकि सम्पूर्ण विकारों को धारण करता है। वे धर्मात्मा भगवान के माहात्म्य, वैभव आदि से सम्पन्न होकर परमानंद-लोक में समा गये। वहीं प्राचीन उपासक देवता विराजमान रहते हैं।'